स्कूली कामकाज से लोकतंत्र के बारे में सीखना

अभिलाषा अवस्थी

2019 की सर्दियों में, मैंने अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर में एक सीमित शोध अध्ययन किया ताकि यह समझ सकूँ कि स्कूल में लोकतंत्र कैसे कार्य करता है और लोकतंत्र से सम्बन्धित अवधारणाओं को पढ़ाने का क्या प्रभाव पड़ता है। मैंने कक्षा छह, सात और आठ के साथ काम किया लेकिन फ़ोकस समूह सातवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़) 2005 के बाद एनसीईआरटी की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में कुछ संशोधन किए गए थे। उसमें प्रस्तुत किए गए लोकतंत्र के विषय के तहत कुछ बुनियादी अवधारणाएँ मैंने बच्चों को सिखाईं।

लोकतंत्र की उपस्थिति

स्कूल की पाठ्यचर्या

कई कारक हैं, जो बच्चे के सीखने को स्वरूप देते हैं। उनमें से एक प्रमुख कारक स्कूल की पाठ्यचर्या है। लेकिन यह कारक अनजाने में कई अन्य कारकों से प्रभावित हो जाता है, जिनमें स्कूली तंत्र में छिपी हुई पाठ्यचर्या काफ़ी महत्त्वपूर्ण कारक है। बच्चे के सीखने को आकार देने के लिए स्कूली पाठ्यचर्या और छिपी हुई पाठ्यचर्या मिलकर काम करते हैं।

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर के सन्दर्भ में मेरा अवलोकन यह था कि भारतीय लोकतंत्र के विवरण के तहत समानता वाला जो मौलिक सिद्धान्त है, उसे अधिकांश विद्यार्थी गहन रूप से समझते थे। क्योंकि जब उनके साथ कोई गतिविधि करवाई जाती या कहानियों पर चर्चा होती तो वे उनमें आने वाले अलोकतांत्रिक व्यवहारों को समझ लेते थे। इससे साफ़ पता चलता है कि बच्चों को इस बात की स्वाभाविक समझ थी कि संवैधानिक रूप से क्या ग़लत है और जहाँ भी ऐसे उदाहरण आते, वे उन्हें पहचान लेते थे।

इस स्कूल में एनसीईआरटी पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाता है। अकादमिक रूप से 'समानता' की अवधारणा तीन कक्षाओं में दी हुई थी। सातवीं कक्षा में जब मैं उन्हें लैंगिक असमानता के बारे में पढ़ा रही थी तो दोनों लिंगों की समानता का विचार उन्होंने ही दिया था। लड़कियों ने सवाल किया कि लड़कों से वे काम क्यों नहीं करवाए जाते जिन्हें वे करती हैं। कुछ लड़कों ने बताया कि वे घरेलू कामों में समान रूप से हाथ बँटाते हैं।

मैंने सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों को लैंगिक असमानता पर एक लघु फ़िल्म दिखाई, जिसका शीर्षक था *दि इम्पॉसिबल ड्रीम।* हास्य और अद्भुत दृश्यों के माध्यम से यह फ़िल्म अपने उद्देश्य को स्पष्ट करती है कि पुरुषों को भी घरेलू कामों और बच्चों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी साझा करनी चाहिए। विद्यार्थियों ने तुरन्त इसमें आने वाली समस्याओं का पता लगाया और उन्हें अपने जीवन से जोड़ा भी। उन्होंने भेदभाव के उन उदाहरणों के बारे में बताया जिनका सामना वे और अन्य लोग अपने लिंग के कारण करते हैं। फिर हमने इस मुद्दे को इस बात से जोड़ा कि संविधान समानता के बारे में क्या कहता है और आश्चर्य की बात थी कि सातवीं कक्षा ने वास्तव में इस अवधारणा को गहराई से आत्मसात कर लिया था। वे अपने घरों में व्याप्त असमानता के बारे में काफ़ी खुलकर बोले, ख़ासकर लड़कियों के मामले में, जिन्हें स्कूल से घर लौटने के बाद घर का काम करना पड़ता था, जबकि लड़कों को इससे छूट मिली हुई थी।

जब मैंने उनसे पूछा कि, "क्या आपको लगता है कि आपको इस स्कूल में और इस कक्षा में बराबर माना जाता है?" तो उन्होंने हामी भरी। आगे मैंने पूछा कि, "आपको ऐसा क्यों लगता है?" तो जवाब मिला कि स्कूल उनके साथ एक समान व्यवहार करता है। उनमें से कुछ ने अपने प्रधानाचार्य का उदाहरण भी दिया जो सभी के साथ समान व्यवहार करते थे और उन्होंने अक्सर भेदभाव के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी।

जब *लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना* शीर्षक अध्याय से एक चरित्र के *मेरी माँ काम नहीं करती* नामक स्टोरीबोर्ड को सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ पढ़ा जा रहा था, तब हमने घर पर मदद करने के विषय पर विस्तार से चर्चा की। जब हमने उन कारणों पर बात की कि लड़के घर पर मदद क्यों नहीं करते, तो उन्होंने कहा कि उनसे मदद करने के लिए कहा ही नहीं जाता। क्योंकि उनके माता-पिता उसी पुरानी धारणा को मानते हैं कि घर के कामों में मदद करना लड़कों का कर्तव्य नहीं है। इस पर एक लड़के ने कहा, "मैंने एक बार अपनी दादी से पूछा कि क्या मैं भगवान की पूजा कर सकता हूँ तो उन्होंने कहा कि यह लड़कों का काम नहीं है।" इससे पता चलता है कि घरों में लड़कों और लड़कियों को काम सौंपने में कितना कड़ापन बरता जाता है और एक के 'माने हुए' कामों को दूसरे से कराने के प्रति कितना कम लचीलापन है। एक लड़की ने

बताया कि ज़्यादातर लड़कियों को स्कूल से घर वापस जाने के बाद, थके होने के बावजूद, घर के कामों में मदद करनी पड़ती है क्योंकि उनसे यही अपेक्षा की जाती है। इस विषय पर सातवीं कक्षा के कई समूहों में बहस हुई और उन्होंने पुरानी पीढ़ियों में मौजूद इस संकुचित दृष्टिकोण के पक्ष और विपक्ष में विभिन्न तर्क दिए।

छठवीं से आठवीं कक्षा तक के सभी बच्चे समानता की अवधारणा से परिचित थे। वे जानते थे कि उनके साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता और अगर ऐसा हुआ तो वे मदद माँग सकते हैं। इसलिए, इन सभी कक्षाओं में इस अवधारणा के साथ तत्काल एक जुड़ाव का एहसास हुआ जिसमें समानता की धारणा को बनाए रखने के लिए सराहना का भाव भी था। ऐसा नहीं लगा कि यह पाठ्यपुस्तक में दी गई कोई अनजान अवधारणा है, बल्कि, यह एक ऐसा साकार भाव था जिसके साथ जुड़ा जा सकता था। जैसे-जैसे हम एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों को पढ़ते गए, वैसे-वैसे विद्यार्थी इस अवधारणा के साथ गहराई से जुड़ते गए और स्कूल में बहुत ध्यानपूर्वक विकसित किए गए ग़ैर-भेदभावपूर्ण वातावरण ने इस कार्य में बहुत मदद की।

कक्षा और विद्यार्थी प्रतिनिधि

प्रत्येक कक्षा में दो कक्षा प्रतिनिधि (सीआर) थे – एक लड़का और एक लड़की। सीआर के अनेक कर्तव्य होते हैं, उदाहरण के लिए, कक्षाओं की स्वच्छता सुनिश्चित करना, अन्य बच्चों को अनुशासित करना, कक्षा के आन्तरिक मामलों को हल करना, महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर शिक्षक के साथ संवाद करना आदि। उन्हें विभिन्न स्कूल-व्यापी कर्तव्य भी निभाने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए मध्याह्न भोजन परोसना, यह सुनिश्चित करना कि प्लेटों को धोकर यथास्थान रखा जा रहा है, जूते अपनी-अपनी जगह रखे जा रहे हैं, देर से आने वालों के नाम लिखना आदि।

इनके अलावा स्कूल में एक न्यायिक अधिकारी और दो विद्यार्थी प्रतिनिधि (एसआर) थे – एक लड़का और एक लड़की। ये सभी पदधारी यानी सीआर, एसआर और न्यायिक अधिकारी, हर बुधवार को स्कूल के बाद बैठक करते, अपने कर्तव्यों और अधिकारों पर चर्चा करते, अपनी कक्षाओं के माहौल को बेहतर और सुन्दर बनाने की योजना बनाते, बदलावों के सुझाव देते और विद्यार्थियों तथा स्टाफ़ के सदस्यों के बीच एक सेतु का काम करते। इनमें से कुछ चर्चाओं में उन्होंने एक प्रतिनिधि के रूप में अपनी क्षमताओं का निर्माण करने की बात भी की। यह सब एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से किया गया था, जिसमें सीआर, विद्यार्थियों के चुने हुए नेताओं के रूप में कार्य कर रहे थे और समग्र विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए निर्णय ले रहे थे, लेकिन किसी ने किसी भी रूप में निरंकुशता का प्रदर्शन नहीं किया और दूसरे प्रतिनिधियों के विचारों का ध्यान भी रखा। इस प्रकार, इस प्रक्रिया से उन्हें इस बात का अन्दाज़ा हुआ कि संसद की बैठक कैसी होती होगी। सभी ने बैठकों में वोट डाले और अपने विचार व्यक्त किए।

लेकिन जल्द ही मैंने महसूस किया कि हालाँकि संरचना और सिद्धान्तों की दृष्टि से तो यह सब बहुत आदर्श लग रहा था, लेकिन किसी ने भी सक्रिय रूप से कोई सुझाव नहीं दिया और यह सारी प्रक्रिया काफ़ी यांत्रिक-सी हो गई थी, जिसमें विद्यार्थी अपने-अपने काम तो बहुत लगन से कर रहे थे, लेकिन प्रक्रियाओं में सुधार करने के लिए सक्रिय रूप से कोई प्रयत्न नहीं कर रहे थे। मैंने सामाजिक अध्ययन की एक कक्षा में एक सीआर से 'प्रतिनिधि' शब्द का अर्थ पूछा। कोई भी इसका उत्तर नहीं जानता था, यहाँ तक कि सीआर भी नहीं। इससे मुझे यह एहसास हुआ कि 'प्रतिनिधि' को लेकर बच्चों की समझ यह है कि वे दूसरों के वोटों के कारण सत्ता की स्थिति में हैं, लेकिन वे अपने कर्तव्य के रूप में लोगों (विद्यार्थियों) के साथ काम करने की अवधारणा को समझ नहीं पाए थे। प्रतिनिधियों ने यह तो समझ लिया था कि वे किस हैसियत से काम कर रहे हैं, लेकिन वे उन ज़िम्मेदारियों को नहीं समझ पाए थे जिन्हें उन्हें निभाना था। विद्यार्थी भी इस तथ्य से बेख़बर लग रहे थे कि वे अपने प्रतिनिधि से सवाल कर सकते हैं और अपनी माँगों को सामने रख सकते हैं।

शिक्षकों द्वारा आदर्श व्यवहार का प्रदर्शन

औपचारिक स्कूली प्रक्रियाओं के बाहर भी मैंने ऐसे उदाहरण देखे जहाँ शिक्षकों ने लोकतांत्रिक व्यवहार का प्रदर्शन किया। उदाहरण के लिए, एक बार जब मैं खेल के मैदान में बैठी थी और मैंने खेल शिक्षक को दो बच्चों से बातें करते हुए सुना, जिनमें कोई झगड़ा हो गया था। उन्होंने दोनों को एक साथ बिठाया और उनसे कुछ सवाल पूछे, जैसे- उनके माता-पिता कहाँ काम करते हैं, क्या उन्हें घर में कोई परेशानी है और अन्त में पूछा कि वे क्यों लड़े। जब दोनों बच्चों ने अपना-अपना पक्ष बताया तो उन्होंने तथ्यों का विश्लेषण किया, विवरणों पर ध्यान दिया और तार्किक रूप से ऐसे अन्य विकल्पों के बारे में चर्चा की जिनका उपयोग वे बच्चे कर सकते थे। फिर उन्होंने दोनों बच्चों का मेल-मिलाप करवाया। मैंने देखा कुछ अन्य विद्यार्थी भी इस बातचीत को सुन रहे थे। इससे मुझे एहसास हुआ कि समस्या के समाधान की अवधारणाओं को आत्मसात करने के लिए इस तरह से अवलोकन करके सीखना कितना आवश्यक है और इस विशिष्ट मामले में यह देखना कितना महत्त्वपूर्ण था जहाँ एक वयस्क मध्यस्थ ने प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उन्हें एक न्यायसंगत और निष्पक्ष समाधान दिया।

इन अवधारणाओं के साथ परिचित होने के कारण

बच्चे समानता की अवधारणा से भली-भाँति परिचित इसलिए थे क्योंकि वे समानता और भेदभाव के बीच अन्तर करने का नज़रिया रखते थे। स्कूल में लम्बे समय से यह दृष्टिकोण विकसित किया जा रहा था। पूरा स्कूल तंत्र, चाहे शिक्षक हों, प्रक्रियाएँ हों या पाठ्यक्रम (छिपा हुआ पाठ्यक्रम भी) समानता को अत्यधिक महत्त्व देता था। समान होने का दावा करने और लोगों को समानता की नज़र से देखने के बीच की कड़ी काफ़ी हद तक मौजूद थी। इसका एक और उदाहरण यह है कि शिक्षकों और प्रधानाचार्य के बीच कोई कड़ा पदानुक्रम नहीं था। रोज़ सुबह वे सभी दैनिक बैठकों में एक साथ बैठते थे और प्रत्येक मुद्दे पर सभी अपना वोट डालते थे; हर एक को अपनी बात कहने का अधिकार था।

छिपे हुए पाठ्यक्रम ने भी इस प्रक्रिया में मदद की। अधिकांश स्कूलों की प्रक्रियाओं में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मौजूद पदानुक्रम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, लेकिन इस स्कूल में बच्चे अधिकांश शिक्षकों और प्रधानाचार्य के साथ आसानी से बात कर सकते थे। कोई भी बच्चा उनके पास जा सकता था और अपनी समस्याएँ उन्हें बता सकता था या सवाल पूछ सकता था। वे विद्यार्थियों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करते थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कुछ बातों में तो शिक्षक और विद्यार्थी बिल्कुल बराबर थे। उदाहरण के लिए, जब सर्दियाँ चरम पर थीं तब भी शिक्षकों के लिए हीटर नहीं लगाए गए थे क्योंकि इस बात को अनुचित माना गया कि केवल शिक्षक उनका उपयोग करें और विद्यार्थियों को यह सुविधा न मिले। सभी के लिए हीटर की व्यवस्था करना स्कूल के लिए व्यावहारिक रूप से सम्भव नहीं था। सभी के साथ समान व्यवहार करने का यह एक पक्का उदाहरण था, जिसे विद्यार्थियों ने देखा और आत्मसात किया।

लोकतंत्र की शिक्षा देना

अपनी शोध पद्धति के अनुसार मैंने माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों को लोकतंत्र से सम्बन्धित अवधारणाएँ सिखाईं, जिसका उल्लेख मैं ऊपर भी कर चुकी हूँ। मैंने कुछ ऐसे विषयों को चुना जो लोकतंत्र के विचार के लिए सामान्य थे, जैसे, प्रतिनिधियों के होने और उनसे सवाल करने का विचार, सरकार, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समानता और एक सक्रिय नागरिक होना।

कक्षा छह : 'पटवारी, शहरी और ग्रामीण प्रशासन'

जब मैंने ग्रामीण प्रशासन, और ग्रामीण परिवेश में मौजूद होने वाले सरकार के प्रतिनिधियों (पटवारी) के बारे में पढ़ाया, तो मैंने यह बात सामने रखी कि मीडिया किस प्रकार समाचार-पत्रों में प्रतिनिधियों की आलोचना/प्रशंसा करता है। सातवीं और आठवीं कक्षा में मैंने पढ़ाया कि लोकसभा में हमारे चुने हुए प्रतिनिधि हमारे अधिकारों और माँगों के लिए कैसे लड़ते हैं। जब यह आधारभूत बात उन्हें सिखाई गई तो वे अपने वास्तविक जीवन के उदाहरण बताने लगे और उन्हें एनसीईआरटी में दिए गए उदाहरण भी उपयोगी लगने लगे।

इस थीम को शहरी प्रशासन के अध्याय में भी उपयोग किया गया। जब हमने उनके वार्ड के सदस्यों और अध्यक्ष के बारे में बात की, तो हालाँकि अधिकांश बच्चे इन नेताओं के बारे में जानते थे, लेकिन वे उन्हें सरकार के एक हिस्से के रूप में नहीं देख पाए। वे तो यही जानते थे कि ये लोग जनता से वोट माँगते हैं और चुनाव जीत जाते हैं। जब दुनियाभर के अच्छे शहर दिखाकर उन्हें एक 'अच्छे शहर' का विचार दिया गया तो विद्यार्थियों ने सवाल किया कि उनका अपना शहर उतना साफ़-सुथरा और सुव्यवस्थित क्यों नहीं है। यह प्रश्न फिर से हमें अपने प्रतिनिधियों के विचार पर ले आया। जल्द ही, वे स्थानीय सरकार की भूमिका को कल्याण कार्यों से जोड़



शहरी प्रशासन के तहत आने वाले क्षेत्रों को जानने के लिए अभ्यास

पाए और उन्होंने महसूस किया कि ये प्रतिनिधि उन लोगों के प्रति जवाबदेह होते हैं जो इन्हें वोट देते हैं और जिनका ये प्रतिनिधित्व करते हैं।

जब मैंने छठवीं कक्षा से पूछा कि उनके रहवास के एक इलाक़े में इतना कचरा और प्रदूषण क्यों है, तो जवाब मिला कि, "कोई भी सड़क साफ़ करने नहीं आता।" मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने कभी स्थानीय प्रतिनिधि से इस बारे में सवाल किया तो बच्चों ने जवाब दिया कि अगर वे कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो उनके परिवार वाले उन्हें रोक देते हैं। एक बच्चे ने कहा कि, "अब तो वे कचरे को स्थानीय पार्क में भी फेंक देते हैं।" इस तरह, उनसे यह पूछताछ करने पर कि उन्होंने अपने नेताओं से कभी सवाल क्यों नहीं किए, उन्हें एहसास हुआ कि वे सवाल कर सकते हैं। कक्षा छह की एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक में स्थानीय प्रतिनिधि के माध्यम से सरकार पर सवाल उठाने वाला कोई प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं दिया गया था।

कक्षा सात : 'मीडिया, लिंग और समानता'

समाचार-पत्र साक्षरता पर एक सप्ताह की कक्षा के बाद सृजन के एक भाग के रूप में (सीखने का ऊँचा क्रम; ब्लूम का वर्गीकरण), सातवीं कक्षा से कहा गया कि वे पाँच-पाँच के समूह में अपना साप्ताहिक समाचार-पत्र बनाएँ। उन्होंने एक समाचार निकाला और पूछा कि "कक्षा नौ के स्पोर्ट्स क्यों हुए बन्द?" नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने इसे 'फ़र्ज़ी समाचार' और 'यह सच नहीं' बताते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। आगे जाँच करने पर, नौवीं कक्षा ने स्वीकार किया कि यह ख़बर सच थी, लेकिन इसे इल्ज़ाम लगाने के लहज़े में लिखा गया था जिससे उनकी छवि बिगड़ती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह उनके और प्रधानाचार्य के बीच एक 'समझौता' था और यह निर्णय आपसी सहमति से लिया गया था, थोपा नहीं गया था। उनकी प्रारम्भिक प्रतिक्रिया इसलिए उग्र थी क्योंकि वे अपनी छवि के प्रति सचेत थे और यह अख़बार पूरे स्कूल में बाँटा गया था। और उन्होंने अपनी ग़लत छवि दिखाए जाने पर आवाज़ उठाई। इस घटना ने विद्यार्थियों को भ्रामक जानकारियाँ फैलाने की मीडिया शक्ति से परिचित करवाया।

जब हमने सातवीं कक्षा को इस प्रतिक्रिया से अवगत कराया तो वे यह जानकर सकते में आ गए कि उन्होंने अधूरी ख़बर छापी थी। फिर जब उनके साथ चर्चा की गई तो उन्होंने स्वीकार किया कि समाचार को सत्यापित करने से पहले उन्होंने उसकी दो-तरफ़ा जाँच नहीं की थी। इस बिन्दु पर आकर मैंने उन्हें समझाया कि शोध पर आधारित ऐसे सन्तुलित समाचार लिखना आवश्यक होता है जो निष्पक्ष रूप से तथ्यों को बताए और किसी विषय के दोनों पक्षों को सामने लाए। स्कूल के सन्दर्भ में लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में मीडिया के बारे में चर्चा की गई और इसे विस्तार देते हुए राष्ट्रीय स्तर पर इसकी भूमिका के बारे में भी चर्चा की गई।

कक्षा आठ : 'संसद – संविधान, अंग, कार्य'

आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से सरकार के बारे में जो कुछ पता चला और उन्होंने अपने वास्तविक जीवन में जो कुछ देखा था, उसके बीच की खाई उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने पहले संसद नहीं देखी थी, टीवी पर भी नहीं। इसलिए, उन्हें इस बात को समझने में बहुत कठिनाई हुई कि सरकार क्या है और क्यों है। पर इसी बात को स्थानीय सरकार के माध्यम से पुन: समझाया गया तो उन्हें इस बारे में समझ बनाने में काफ़ी मदद मिली। स्थानीय से केन्द्रीय तक जाने की विधि से मुझे तीनों कक्षाओं को पढ़ाने में सहायता मिली।

समानता के बारे में विद्यार्थियों की समझ और प्रतिनिधियों की अवधारणा से मुझे इससे जुड़ी शैक्षिक अवधारणा को और अधिक विकसित करने में मदद मिली। अनुभव तो उनको स्कूल से ही प्राप्त हो गए थे, अतः वे गम्भीर रूप से इन पर चिन्तन कर सके और इन्हें असम्बद्ध अमूर्त विचारों की बजाय वास्तविक जीवन की अवधारणाओं के रूप में समझ सके। इसके अलावा, वे उन क्षेत्रों की पहचान भी कर सके जहाँ उन्होंने इन विचारों को व्यावहारिक रूप से असफल होते देखा, विशेषकर स्कूल स्तर पर। भले ही विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक ढाँचे के बारे में ठीक से पता नहीं था, लेकिन वे उन चीज़ों से काफ़ी परिचित थे जो उनके सामने थीं, जैसे, उनके स्थानीय नेता और स्कूल के नेता। उन्हें पता था कि ये लोग उनकी भलाई के लिए ज़िम्मेदार थे और यदि आवश्यक हो तो वे उनके कार्यों पर सवाल उठा सकते थे। इसके साथ ही सीआर को भी अपनी शक्ति के बारे में पता था। साथ में वे भी यह जानते थे कि उनके कार्यों पर सवाल उठाया जा सकता है और अगर वे अपनी ज़िम्मेदारियाँ ठीक से नहीं निभाते तो उन्हें अपना पद छोड़ने के लिए भी कहा जा सकता है।

समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसी अवधारणाओं के लिए भी विद्यार्थियों ने कक्षा में अपने परिवेश के उदाहरण पेश किए। इस जुड़ाव ने उन्हें इन विषयों के तहत ऊँचे स्तर की अवधारणाओं को समझने और पाठ्यपुस्तक में दिए गए उदाहरणों तक ले जाने में मदद की।

फ़ोकस समूह चर्चा

इस स्कूल के साथ अपने काम के दौरान मैंने नौवीं कक्षा के बच्चों के साथ एक फ़ोकस समूह चर्चा की ताकि इस पूरे विषय के बारे में उनकी समझ को जाँच सकूँ। दस-दस बच्चों के तीन समूह बनाए गए। *समूह 1* में ऐसे बच्चे थे जो कक्षा में बहुत सक्रिय थे, विशेष रूप से अपनी राय व्यक्त करने और चीज़ों के बारे में जागरूक होने की दृष्टि से। *समूह 2* में ऐसे बच्चे थे जो

कक्षा में न तो बहुत सक्रिय थे और न ही बहुत निष्क्रिय। *समूह 3* में ऐसे बच्चे थे जो बिल्कुल भी सक्रिय नहीं थे। लोकतंत्र और सरकार से सम्बन्धित अधिकांश विचारों को तीनों समूह अच्छी तरह से समझ गए थे। उनकी कक्षा कैसी चल रही थी और सरकार ने कैसा काम किया, इनके बीच वे स्पष्ट सम्बन्ध देख पाए।

इसके अलावा *समूह 1* को लोकतंत्र के प्रक्रियात्मक पहलू की जानकारी थी क्योंकि उसमें ऐसे कई विद्यार्थी थे जो स्कूल के प्रतिनिधियों के रूप में भाग ले रहे थे। वे जानते थे कि उनसे पूछताछ की जा सकती है, इसलिए उन्हें अपने नेताओं से पूछताछ करनी चाहिए।

समूह 2 सामान्य मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता था; विद्यार्थियों को पता था कि वोट माँगना एक जाल की तरह था और सरकार पर सवाल उठाने से हत्या हो सकती है या सिर्फ निराशा हाथ लग सकती है। इस समूह को लगा कि इस सबमें शामिल होना बहुत झंझट वाला काम है।

समूह 3 ने सरकार को एक अभिभावक के रूप में देखा जो ग़रीबों की देखभाल करता है यह जानते हुए भी कि यह भ्रष्टाचार में शामिल है, और वह भ्रष्टाचार में शामिल लोगों को खोजने का काम भी करता है।

यदि इस बात की जाँच की जाए कि इन तीन कक्षाओं (छह, सात और आठ) में सिखाई गई अवधारणाओं ने विद्यार्थियों को इन विचारों को समझने में मदद की या नहीं तो यह कहा जा सकता है कि परिणाम सकारात्मक रहे और इससे काफ़ी हद तक मदद मिली। लेकिन सभी समूह सरकार के तीन अंगों के नाम और कार्यों के बारे में नहीं बता पाए। इसके अलावा, वे अपने स्थानीय वार्ड के सदस्यों के नाम भी नहीं बता पाए जो कि एक असामान्य बात थी क्योंकि उनमें से कुछ राजनीतिक रूप से जागरूक थे।

निष्कर्ष

जैसा कि ऊपर दिए गए उदाहरणों में बताया गया है, एक अवधारणा के रूप में लोकतंत्र को व्यावहारिक रूप से जीने की आवश्यकता है। बच्चों को ऐसा उपयुक्त वातावरण दिया जा सकता है जहाँ वे समान महसूस करें और अपने सवाल और राय व्यक्त करने में न झिझकें। बच्चे उन चीज़ों के साथ जल्द ही जुड़ जाते हैं जिन्हें वे मूर्त रूप से देख सकते हों। ऐसा उन अवधारणाओं के साथ भी होता है जिन्हें जिया जाता है और अभ्यास व व्यवहार में भी लाया जाता है। ठीक वैसे ही, इस मामले में, जब स्कूल का वातावरण इस अवधारणा को व्यावहारिक रूप से समझने में लगातार उनकी मदद कर रहा है तो उनके लिए पुस्तक में दिए गए विवरणों को समझना और फिर इस अवधारणा को पाठ में प्रस्तुत स्थितियों और परिदृश्यों से जोड़ना आसान हो जाता है। और तब, उन्हें उनके द्वारा पढ़ी जा रही बातों पर सवाल करने, और उन्हें स्कूल के बाहर के अपने जीवन में लागू करने में मदद मिलती है।



सातवीं कक्षा द्वारा बनाए गए समाचार-पत्र



समाचारों के प्रकारों पर चर्चा



अभिलाषा अवस्थी वर्तमान में उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कैंपस एसोसिएट के रूप में कार्यरत हैं। सामाजिक अध्ययन और बच्चों में भाषा का विकास करना उनकी रुचि के क्षेत्र हैं। उन्हें खेलना और चित्रकारी करना पसन्द है। उनसे abhilasha.awasthi18_mae@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल